दैनिक जागरण 20/10/2026

मुर्गियों की बीट से मछलियों का भोजन, कमाई के खुलेंगे दो रास्ते

जागरण संवाददाता, कानपुर: अगर मुर्गी पालन और मछली पालन को एक ही व्यवस्था में जोड़ दिया जाए तो किसान एक साथ दो स्रोतों से कमाई कर सकता है। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के किसान मेले में कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) फिरोजाबाद ने ऐसा ही इंटीग्रेटेड फिश फार्मिंग माडल प्रदर्शित किया, जिसने किसानों का ध्यान खींचा। विज्ञानियों ने बताया कि मुर्गियों की बीट का नियंत्रित उपयोग तालाब में प्राकृतिक खाद्य जीवों के विकास में सहायक होता है, जिससे मछलियों को प्राकृतिक भोजन मिलता है और पालन की लागत घटाने में मदद मिलती है।

केवीके फिरोजाबाद के विज्ञानी डा. ओमकार सिंह यादव ने बताया कि माडल में तालाब के किनारे मुर्गियों का बाड़ा बनाया जाता है। मुर्गियों से निकलने वाला जैविक अपशिष्ट बेकार नहीं जाता, बल्कि वैज्ञानिक तरीके से तालाब में उपयोग कर प्राकृतिक प्लवकों और सूक्ष्म जीवों की वृद्धि कराई जाती है। यही जीव मछलियों के लिए प्राकृतिक आहार का काम करते हैं। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि अपशिष्ट की मात्रा नियंत्रित रखना जरूरी है, क्योंकि अधिक मात्रा पानी में आक्सीजन की कमी पैदा कर सकती है। मेले में सोनाली नस्ल की मुर्गियों का भी प्रदर्शन किया गया। वैज्ञानिकों ने बताया कि किसान अंडों की नियमित बिक्री से निरंतर आय प्राप्त कर सकता है, जबकि तालाब से तैयार मछलियों की बिक्री अतिरिक्त कमाई का जरिया बनती है। इससे एक ही परिसर में उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव होता है। उन्होंने बताया कि माडल अपनाने से पहले तालाब की क्षमता, पानी की गुणवत्ता और मछलियों की संख्या का विज्ञानी आकलन जरूरी है।



मछलियों के भोजन का स्टाल● अर्काइव

ऐसे करता है काम यह माडल

- तालाब के किनारे बनाया जाता है मुर्गियों का बाड़ा।
- मुर्गियों की बीट का नियंत्रित उपयोग तालाब में किया जाता है।
- इससे प्राकृतिक प्लवक और सूक्ष्म जीव विकसित होते हैं।
- यही जीव मछलियों के प्राकृतिक भोजन का स्रोत बनते हैं।
- अंडा और मछली, दोनों से किसान को अलग-अलग आय मिलती है।
- पानी की गुणवत्ता और आक्सीजन पर नियमित निगरानी जरूरी रहती है।

सीएसए सिखाएगा किसानों को यंत्रों का प्रयोग

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि किसानों को बैटरी वाले ट्रैक्टर, ग्रास कटर, थ्रेशर,सोलर पंप आदि का इस्तेमाल सिखाएगा। इससे श्रमिकों की कमी होने से खेती-किसानी के काम में दिक्कत नहीं आएगी। खासतौर पर एक से तीन एकड़ वाले छोटे किसानों को इससे राहत मिलेगी।

सीएसए में लगे मेले में किसानों ने इन यंत्रों को पसंद किया है। यंत्रों की खरीद में किसानों को सब्सिडी भी मिल रही है। सीएसए के निदेशक प्रसार डॉ. वीके त्रिपाठी ने बताया कि खरपतवार हटाने, गुड़ाई, बोआई आदि कार्यों के लिए किसानों को श्रमिक लगाने की जरूरत नहीं रहेगी। बैटरी और सौर ऊर्जा से चलने वाले यंत्र सस्ते पड़ेंगे। केवीके के माध्यम से किसानों को इनके इस्तेमाल का तरीका बताया जाएगा। कृषि यंत्रों को लेकर सीएसए का विकल्प स्टार्टअप के साथ करार हुआ है। (ब्यूरो)

अमर उजाला 20/10/2026